International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 11-12

पत्रकारिता में हिन्दी की भूमिका

एकता कुमारी [1]

[1] पुस्तकालयाध्यक्ष, एच.डी. कालेंज आफं एजूकेशन, साल्हावास, झज्जर, हरियाणा, भारत।

सारांश
भारत में पत्रकारिता लगभग 100 वर्ष पुराने समय से भी अधिक समय से की जा रही है। उदंत मार्तण्ड नामक हिन्दी मासिक पत्र सबसे पहले प्रकाशित किया गया। माननीय युगल किशोर इसके संपादक थे और इसका प्रकाशन एवं मुद्रण भी इन्होनें ही किया था। ये पश्चिम बंगाल में कलकता के कोल्हू टीला नामक स्थान से प्रकाशित किया गया। कुछ समय बाद में किसी कारण से इसे बंद करना पडा इसके दो मुख्य कारण थे। 1. इसको पढने वालो की संख्या बहुत कम थी 2. कलकता में हिन्दी भाषा का प्रचलन कम होने के कारण से। हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी पत्रकारिता को निम्न चरणों में विभाजन किया गया है। प्रथम चरण 1826 से 1867, द्वितीय चरण 1867 से 1900, तृतीय चरण 1900 से 1920, चतुर्थ चरण 1920 से 1947 और पंचम चरण 1947 से आज तक माना गया है। इसके बाद में तो भारत में पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत सा विकास होने लगा। जिससे समय के अनुसार इसकी मांग भी बढती जाने लगी और जनता शिक्षित होने के साथ इससे जुडने लगी।

मूल शब्द : जागरूक, आधुनिकता, पत्रिकाओं का प्रकाशन, सामाजिक समस्याओं, प्रचलन, प्रेरित, यापार, विज्ञान, शिक्षा, अर्थवयव्स्था, बंगला भाषा, प्रकाशन आरम्भ, मुद्रण, अग्रसर, झुकाव, योगदान को सराहा, प्रचलन कम और दैनिक जागरण, धर्मयुग, विश्व स्तर।

प्रस्तावना

हिन्दी पत्रकारिता अधुनिक युग से देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती आ रही है। भारत में आज के समय में अनेक प्रकार के पत्र प्रकाशित किये जाते है। जो अपने राज्य, प्रदेश की प्रतिदिन की गतिविधियां और समाज में होने वाली दिनप्रति की धटनाओं को अपने तरीके से प्रकाशित करके अपना कार्य करते है। हिन्दी भाषा आज केवल प्रदेश की भाषा ना रह कर विदेशों में भी अपनी छाप छोड रही है। इस समय हिन्दी की विदेशों में भी मांग बढ रही है। पत्रकारिता से इसको आगे ले जाने में हमें बहुत मदद मिलती है। इसको हम निम्न तरीके से बता सकते है। जो कि इस प्रकार से है।

प्रथम चरणः हिन्दी पत्रों का प्रकाशन करने के लिये मुद्रक, पत्रकार और संपादक की अपनी भूमिका होती है। जो कि उस समय नहीं थे और पाठकों की रूची भी कम थी। 1848 में बंगला भाषा के साथ में हिन्दी में मालवा पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ। 1861 में सूरज प्रकाश नामक आगरा से और 1865 में तत्वबोधिनी बरेली से हिन्दी में प्रकाशित हुआ। इसके बाद भारत में पत्रकारिता ने विकास के कदम आगे बढानें आरम्भ कर दिये।

द्वितीय चरणः इस युग की शुरूआत भारतेन्दु द्वारा प्रकाशित कवि वचन सुधा के प्रकाशन से होती है। इनका इस युग में महत्व पूर्ण योगदान है। इस युग हो भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता के नाम से भी जाना जाता है। 1873 में हरिश्चन्द्र चंद्रिका का प्रकाशन किया गया और 1877 मे हिन्दी प्रदीप मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जिसे आज भी उनके द्वारा प्रकाशित किये गये पत्रकारिता में योगदान को सराहा जाता है। यह पत्रिका समस्त राष्ट्र भावना से ओत–प्रोत होती थी और 33 सालों के लगतार प्रकाशन के बाद में अग्रेंजों ने इसे बंद करवा दिया था। इस युग में हिन्दी के पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन की संख्या में बहुत अधिक व्द्वि हुई थी।

तृतीय चरणः इस युग का आरम्भ द्विवेदी युग से माना गया है। क्योकि महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य, भाषा और पत्रकारिता को एक नया रास्ता दिखाया था। इस युग में राष्ट्र भावना के प्रति लोगों में उत्साह देखने के लायक था। इस चरण में सरस्वती नामक पत्रिका का सफलता से प्रकाशन होने के बाद में मर्यादा, इन्दु, क्षमालोक, विश्वमित्र, कर्मवीर और आज का प्रकाशन पूर्ण किया गया। इस युग में हिन्दी भाषा को एकरूपता में ढाला गया और सामाजिक समस्याओं के प्रति जनता को सचेत करने के प्रयास किये गये। साहित्य जगत के लिये अलग से पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन इसी भी युग में होने लगा था। इस युग में हिन्दी के पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन की गुणवता में काफी सुधार और बहुत अधिक वृद्वि होने लगी थी। इससे आने वाली नई पीढी को आसानी से सिखने में मदद मिलेगी और वो इसे और रूचिकर बनाने का कार्य करेगें।

चतुर्थ चरणः भारत की आजादी से पहले के इस युग का पूर्ण श्रेय बापू के नाम से जाने वाले व्यक्ति महात्मा गांधी को जाता है। उनके द्वारा किये गये जन आदोंलन से जनता का एक तरफ झुकाव और उनसे प्रेरित होकर आगे बढने से ही देश आजाद हुआ था। बापु ने 1921 में हिन्दी जनजीवन और हरिजन नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जो कि जनता को बहुत ही अधिक पंसद आया। उस समय की कुछ अन्य पत्रिकाएं सैनिक, दैनिक जागरण, नवभारत, दैनिक नवयुग और प्रजा सेवक नाम से प्रकाशित हुई और हिन्दी उसके बाद कुल मिलाकर विकास के पथ पर अग्रसर होती दिखाई देती है। जो कि आने वाले समय के लिये शुभ संकेत माना जा सकता है।

पंचम चरणः इस युग में हिन्दी पत्रकारिता ने आधुनिकता के पथ पर आगे बढना आरम्भ कर दिया था। अग्रेजों के अज्याचार से तंग जनता उनसे आजादी के लिये प्रत्येक कदम पर एक साथ मिलकर

चलने लगी। भारत को बाटंने के लिये अग्रेजों के भारत पाक युद्व करवाया और भारत चीन युद्व भी उन्हीं की देन थी। जनता समाचार और प्रकारिता के माध्यम से जागरूक होने लगी थी। खेल, व्यापार, विज्ञान, शिक्षा, अर्थवयव्स्था और राजनीति की प्रमुख खबर पत्रकारिता के माध्यम से जनता के बीच आने लगी और जनता के इसके प्रति लगाव के कारण से एवं पल–पल की जानकारी लेने के लिये पत्र–पत्रिकाओं को अधिक से अधिक प्रयोग किया जाने लगा। इस समय यह माध्यम अपने अच्छे कार्य के लिये दिनरात एक होकर इसको आगे ले जाने में लगा हुआ हैं। जो कि हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने वाले और नये जुडने वालो के लिये साथ में देश के विकास के लिए बहुत ही अच्छा और सराहनीय और सरल कदम माना जा सकता है।

उद्देश्य

हिन्दी पत्रिका को रोचक बनाने के लिये उसमें निम्नलिखित गुण विद्यमान होने चाहिये, जो इस प्रकार से है। रोचकता, सत्यता, तथ्य शुद्वता, आडम्बरपूर्ण शब्दों से बचना, सरल भाषा का प्रयोग करना, स्पष्टता, उपदेश का अभाव, प्रवाहभयता, वस्तुनिष्ठता, पथ–प्रदर्शन, उपदेश का अभाव, प्रत्याशित स्त्रोत, पूर्वानुमानित और अप्रत्याशित स्त्रोत के माध्यम से लिखकर उसे अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शब्दों के चयन करने से पत्रिका में निखार लाया जा सकता है। आज के समय में बहुत से हिन्दी के प्रमुख दैनिक समाचार–पत्रों में दैनिक जागरण, पंजाब केसरी, नवभारत, अमर अजाला आदि। प्रमुख पत्रिकाओं में धर्मयुग, मायापुरी, सहेली, मनोरमा, आरोग्य आदि। इनमें विश्व स्तर पर प्रकाशित समाचार और चित्रों सहित देखने को मिलते है। ये सब हिन्दी पत्रकारिता के उज्ज्वल भविष्य की ओर बढतें दिखाई दे रहे है। वर्तमान समय में हिन्दी में पत्र–पत्रिकाओं व समाचार के अनेक माध्यम हमारे सामने आते है।

हिन्दी पत्रकारिता का जीवन में इतना ज्यादा महत्व होने लगा है कि सुबह से शाम तक इसके सहारे ही हम देश के साथ विदेशों की जानकारी प्राप्त हो रही है। किसी भी कार्य को करने के लिये उसकी जडों तक जानकारी प्राप्त करके ही आगे बढा जा सकता है। नये समय में मिडिया समाज को साथ लेकर चल रहा है। जिससे उसे अपना कार्य करने में आसानी हो रही है। साक्षरता बनाने में भी इसी मिडिया का बहुत बडा योगदान रहा है। नये युग के बच्चों को विभिन्न प्रकार माध्यमों से सीखाकर उसे सही तरिके से आगे ले जाने का कार्य करना होगा।

इनमें मुख्य को इस प्रकार से विभाजित कर सकते है।

1. दूर संचार के माध्यम से जैसे टेलिविजन।
2. इलैक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से जैसे कम्प्यूटर, सिनेना, रेडियो और टी. वी.।
3. प्रिंट मीडिया के माध्यम से पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन।

के. पी. नारायणन् अनुसार : हिन्दी समाचार व पत्र–पत्रिकाओं किसी सामयिक धटना या महत्वपूर्ण तथ्यों का परिशुद्ध तथा निष्पक्ष विवरण होता है। जिससे उस पत्र–पत्रिकाओं में पाठकों की रूचि होती है, जो इस विवरण को प्रकाशित करता है।

पत्रकारिता का स्थान

इस समय देश में पत्रकारिता का विकास में बहुत बडा योगदान माना जा सकता है। हिन्दी में पत्रकारिता के माध्यम से दिन–रात प्रगति होती दिखाई दे रही है। युवा वर्ग को इस क्षेत्र में कार्य करने से अच्छा रोजगार प्राप्त हो सकता है और वह इसके माध्यम से हिन्दी को भी आगे ले जाने के कार्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है।

निष्कर्ष

हिन्दी पत्रकारिता लेखन एक कला है, ये कला हिन्दी पत्र–पत्रिकाओ और पाठक दोनों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से एक–दुसरे को जोडती है। जन–साधारण में सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों के प्रति रूचि उत्लन्न हो, जो समाज के लिये नये निर्माण के उपाय करता है। ये इस समय तेजी से देश के साथ विदेशों में भी अपना स्थान बनाने के लिये प्रयासरत है। इससे सामाज को आगे बढानें में हिन्दी के माध्यम से पत्रिकाओं का समाज के निर्माण को आगे बढानें में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। आधुनिक युग में दिन–प्रतिदिन हिन्दी ही मांग बढती जा रही है और विश्व में भी आज हिन्दी की गुज सुनाई देती है। इससे समाज को एक साथ ले जाने में मदद मिलती है और समाज के साथ पत्र–पत्रिकाओं का हिन्दी में प्रकाशित होने से इस युग में सुनहरे अवसर प्राप्त होने से युवा वर्ग इसमें अधिक भागीदारी दिखाने लगे है। हिन्दी पत्रकारिता से जुडना एक सुनहरे भविष्य को आगे ले जाने के लिये सही निर्णय और सटीक कदम माना जा सकता है। जो कि बिना किसी डरके समाज सेवा और हिन्दी पत्रकारिता को आगे ले जाने के लिये अच्छा कदम मान जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी, लेखक डा0 बी. डी. विज। 2016
2. काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन प्रयोजनमूलक हिन्दी भारतीय साहित्य। 2014
3. हिन्दी पत्रकारिता, नई दिल्ली। 2016–17
4. हिन्दी पत्रकारिता : उद्भव और विकास। 2017
5. समाचार लेखन कला। 2016
6. आधुनिक हिन्इी साहित्य स्वरूप और प्रक्रिया। 2015–16